**शोध–प्रारूप**

# ukxiqjh lkfgR;dkj euiqju uk;d thou vkSj lkfgR; % ,d v/;;u

**पीएच०डी० उपाधि** gsrq izLrkfor 'kks/k çk:i

tutkrh; ,oa {ks=h; Hkk"kk ladk;
o"kZ % 2024

'kks/k funsZ'kd

**डॉ०** jkert; ukbd
विभागाध्यक्ष, नागपुरी विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा
राँची विष्वविद्यालय, राँची।

'kks/kkFkhZ

lhek dqekjh
यू.जी.सी. नेट/एन.एफ.एस.सी उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

Lukrdksùkj ukxiqjh foHkkx
jkaph fo'ofo|ky;] jkaph ¼>kj[k.M½

# ^^ukxiqjh lkfgR;dkj euiqju uk;d thou vkSj lkfgR; % ,d v/;;u^^

## 'kks/k izk:i

### Hkwfedk%

भारत के अनेको राज्य में एक छोटा सा राज्य झारखण्ड है। झारखण्ड की सभ्यता और संस्कृति अप्रतिम है। झारखण्ड की पहचान पूरे भारत वर्ष में सबसे अलग स्थान रखता है। यहाँ की लोक कलाएँ बेहद खास हैं। नृत्य, संगीत और वाद्ययंत्र के बिना वे अधूरे हैं। झारखण्ड में ''चलना ही नृत्य और बोलना ही संगीत है''। झारखण्ड की संस्कृति अपने आप में अनोखी है जो लोगों के लिए सदा से आकर्षण का केन्द्र रहा है। लोक कला को निरंतर आगे ले जाने में यहां के कलाकारों का योगदान रहा है। चूँकि कलाकारों के बिना कला बेजान होती है।

झारखड के लोग पहले दिन भर खेत–खलिहान में, जंगल–पहाड़ में काम करते हैं और रात्रि में पहला पहर से आधी रात तक अपनी थकान मिटाने के लिए पूरे गाँव के बुढ़े बुजूर्ग या जात–परजात उस गाँव में रहने वाले अखरा में सामुहिक रूप से बिना भेद–भाव में लोग पर्व–त्योहारों सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से मनाते हैं। यहां के लोगों में हर किसी के अंदर एक लोक कला छुपा रहता है। कोई नाचने में, कोई गाने में तो कोई बजाने में निपुण होता है।

इस संसार मे देखा जाय तो विभिन्न प्रकार के कलाओं की परंपरा काफी प्राचीन कालों से लोगों के बीच चली आ रही है। कला को लोग अपने दैनिक जीवन में मनोरंजन का साधन मानते हैं। जब प्राचीन काल में रेडियो, टी.वी., सिनेमा, इंटरनेट, यूट्यूब, सोषल मीडिया, डिजिटल सामग्री नहीं था जिसके कारण लोग अपने में गीत गाकर, बजाकर, नृत्य कर के मनोरंजन किया करते थे। इसी कारण वे हमेषा निरोग रहा करते थे, जो कोई भी लोक कला को अपनाया वह बहुत ऊँचे षिखर तक पहुँचा। कला हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। यह कला आज लोगों को सम्मान भी दिलाती है। कला हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। किसी भी प्रदेष की पहचान का आधार वहाँ की संस्कृति ही होती है। वहाँ की बोली जाने वाली भाषाएँ लोक संगीत व लोक नृत्य भी अपनी अनुपम लोक संस्कृति की वजह से ही झारखण्ड की यह मनोरम भूमि लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

झारखण्ड की गोद में कवि, रचनाकार, गीतकार की संख्या हजारों में है। साहित्य के प्रमुख कवियों में मुख्य रूप से रघुनाथ नृपत्ति, बरजू राम, हनुमान

सिंह, महंत घासी, घासी राम, कंचन, सोबरन, रंगटू मलार जैसे दिग्गज कवि हुए जिन्होंने नागपुरी पद्य साहित्य को सजाया–संवारा एवं इसकी गरीमा को अक्षुण्ण बनाए रखा। आगे चल कर धनीराम बक्षी, अनूप राय, दृग्पाल राम देवघरिया, लाल मनमोहन नाथ शाहदेव जैसे महान प्रतिभाषाली कवियों ने नागपुरी साहित्य को निखारा।

नागपुरी का आधुनिक साहित्य समृद्ध एवं उज्जवल है। फलतः पद्य की अविरल धारा के साथ–साथ गद्य का प्रवाह भी नयी क्रांति के साथ प्रारम्भ होता है। साहित्यकारों की कलम गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, नाटक, निबंध, लेख, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा–वृतांत, व्यंग्य आदि में अपने भाव का प्रकाषन करता है। इस कालखण्ड के प्रमुख नाम है जिन्होंने नागपुरी संस्कृति को समग्र रूप से प्रस्तुत किया :– डॉ० बी०पी० केषरी, शारदा प्रसाद शर्मा, मृत्युंजन नाथ शर्मा, सहनी उपेन्द्र पाल नहन, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, डॉ० भुवनेष्वर अनुज, डॉ० कुमारी बासन्ती, डॉ० गिरिधारी राम गौंझू, डॉ० त्रिवेणी नाथ साहु, डॉ० सविता केषरी, डॉ० उमेष नन्द तिवारी, डॉ० शकुन्तला मिश्र, पद्मश्री मुकुन्द नायक, पद्मश्री मधु मंसुरी हसमुख, क्षितिज कुमार राय, प्रमोद कुमार राय, देवदास विष्वकर्मा, महावीर नायक आदि नागपुरी साहित्य के भंडार को समृद्ध कर रहे है। ऐसे ही लोक कलाकारों में अग्रणी पंक्ति में एक सुविख्यात नाम है झारखण्ड के मान्दर सम्राट पुरस्कार से सम्मानित मनपुरन नायक। नागपुरी लोक संगीत व कला के जगत में विषिष्ट स्थान रखने वाले बहुमूखी प्रतिभा के धनी इस कलाकार में काव्य सृजन तो है ही गायन, वादन और नर्तन भी उतना ही उम्दा है। किसी व्यक्ति विषेष में इन चारों गुणों का संगम विरले ही देखने को मिलता है।

मनपूरन नायक इनका व्यक्तित्व अत्यन्त सीधा और सरल, जो अपने कार्य को बहुत ही निष्ठा और लगन के साथ करने वाले सहृदय किसी से ईर्ष्या और ना किसी से द्वेष रखने वाले एक नेक जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति हैं। इनका जन्म 20 जनवरी 1957 ई० नायक मुहल्ला, पोस्ट+थाना–चुटिया, जिला – राँची में पिता– स्व० जगरनाथ नायक, माता– स्व० फुलमती के सन्तान के रूप में हुआ। इनकी पढ़ाई – लिखाई चुटिया में रह कर ही सम्पन्न हुई।

बचपन से ही मनपूरन नायक गरीबी देखते आए, लेकिन उन्होने आर्थिक तंगी को कभी अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया, उन्होने गरीबी से लड़ कर न केवल अपनी पढ़ाइ पूरी की बल्कि आज अपनी पहचान राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर बना ली है।

## 'kks/k dh izsj.kk%&

नागपुरी साहित्यकार मनपूरन नायक के जीवन एवं कला संस्कृति से संबंधित शोध करने की प्रेरणा मुझे नेट उत्तीर्ण करने के पश्चात् हुआ, जब मैं पीएच०डी० करने की सोची तो इसके लिए मुझे किसी विषय के उपर शोध करना है तो मैने मनपूरन नायक के बारे में मेरी प्रिय सहेली नमिता पुनम, जलेष्वर महतो और हमारे गुरू डॉ० रिझू नायक, भाई प्रभाकर से बात कि, उन्होंने बताया कि ये एक बहुत ही विख्यात कलाकारी जो झारखण्ड ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय व अन्तराट्रीय स्तर पर लोक कला व संस्कृति का परचम लहरा रहे हैं। मैं एक नायक परिवार में ही पली बढ़ी हूँ तो बचपन से ही मैं अपने घर में अपने नाना रिष्तेदारों को गाना–बजाना करते, देखते आयी हूँ, और मुझे अपनी संस्कृति से बेहद लगाव व प्यार रहा है। जिस वजह से मैं मनपूरन नायक के जीवन से प्रभावित हुई और इनके बारे में जहाँ से भी सम्भव हुआ वहाँ से मैंने जानकारी हासिल करना प्रारम्भ किया। ये न केवल वादन, गायन, नर्तन, लेखन बल्कि अभिनय के क्षेत्र में भी आगे हैं। ये एक सामाजिक कार्यकर्त्ता नेक दिल इंसान भी हैं। इनकी ये कला मेरे मानस पटल पर बैठ गयी। इसके पश्चात् मैंने सोचा कि झारखण्ड के ऐसे कलाकार पर क्यों न शोध कार्य किया जाय। पाष्चात्य प्रभाव एवं रिमिक्स के युग में पारम्परिक नागपुरी गायन, नृत्य, वादन, लेखन कला दम तोड़ती नजर आ रही है, इन सबो को देखते हुए मनपूरन नायक ने कला–संस्कृति को बचाने के लिए बिड़ा उठाया है। इनकी रचना, गीत–नृत्य, संस्कृति, धार्मिक भावना को समाज के सामने प्रस्तुत करना ही मेरे लिए सौभाग्य की बात है। यही कारण है कि इनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मैंने इनपर अपना शोध कार्य करने का निर्णय लिया।

## fo"k; dh ekSfydrk%&

प्रस्तुत शोध कार्य मनपूरन नायक के जीवन पर केन्द्रित है। मनपूरन जी के नागपुरी साहित्य में पूर्ण रूप से उनके गुणों का बखान उनके जीवन दर्षन का चित्रांष नहीं हो पाया है उनके कई किताबें अभी भी अप्रकाषित हैं जो बाधक बनी हुई है। नागपुरी साहित्यकार, कलाकार मनपुरन नायक मांदर सम्राट के ‘‘जीवन और साहित्य‘‘ में शोध कार्य संभव हो पाया तो इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में इनके भाव धारा प्रकट होगा।

अतः प्रस्तावित शोध कार्य अपनी अमीट छाप छोड़ जायगी। पूरे झारखण्ड के युवा वर्ग इनसे प्रेरणा लेगी। अपनी झारखण्ड संस्कृति को इनके नजर से देख, समझ और सीख पायेगी, ऐसा मेरा विचार है।

## 'kks/k dk lekt esa izHkko%&

नागपुरी भाषा साहित्य के प्रति न जाने कितने साहित्यकार आगे आये और नागपुरी भाषा के लिए अपनी संपूर्ण जीवन समाज के लिए समर्पित रहे। जिस तरह से मनपूरन नायक एक गीतकार, नर्तक, साहित्यकार, कहानीकार, नाटककार, वादक, समाजिक कार्यकर्त्ता हैं, जो झारखण्ड संस्कृति की कला को ऊँचाई तक पहुँचाये हैं। ये भारत देष ही नहीं बल्कि विदेषों में भी नागपुरी लोक भाषा लोक संस्कृति का परचम लहरा चुके हैं।

आने वाले दिनों में रंगमंच, लोक मंच, साहित्यमंच आदि सामाजिक क्रिया–कलापों का नये सिरे से गठन हो पायेगा। नयी पीढ़ी के लोगों में नागपुरी भाषा एवं संस्कृति सभ्यता के प्रति उत्साह जागृत होगी। आने वाले दिनों में मनपूरन नायक जैसा कलाकार, नृत्यकार, साहित्यकार, नाटककार, वाद्यकार, गीतकार से प्रेरित होकर इनके जैसे ही इनके राहों में चलने का प्रयास करेंगे।

यह शोध कार्य, षोध प्रबंध के रूप में जीने की कला–संस्कृति और मूल्यांकन का मापदंड तैयार करेगा।

# शोध विधि%&

किसी भी कार्य की विधि वैज्ञानिक होती है। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित यथार्थ व निष्चित निष्कर्ष पर होता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि षोध कार्य बुनियादी अध्ययन विषय से संबंधित वास्तविक तथ्यों का संकलन है। वास्तविक तथ्यों को काल्पनिक ढंग से एकत्रित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए कुछ ठोस तरीका का प्रमाण होना अति आवष्यक है, चूंकि चयनित विषय ''नागपुरी साहित्यकार मनपूरन नायक जीवन और साहित्य : एक अध्ययन'' जीवन परक षोध कार्य है। इसमें इनके जीवन से संबंधित, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिकत एवं साहित्यिक, जीवन के विभिन्न पहलूओं का विष्लेषण करना है। इसके अलावा वास्तविक षोध कार्य तर्कसंगत पूर्ण करने के लिए कुछ षोध विधि एवं प्रविधि का आधार विष्वसनीय तथा जानकारियाँ एवं आंकडों आदि को एकत्र करने एवं उसे प्रस्तुत करने की विधियां हैं। जैसे–

(1) विष्लेषणात्मक विधि
(2) आलोचनात्मक विधि
(3) वर्णात्मक विधि
(4) तुलनात्मक विधि
(5) प्रष्नावली विधि
(6) साक्षात्कार विधि

# 'kks/k dk egRo%&

कोई भी शोध कार्य का महत्व व्यक्तिगत से कहीं ज्यादा सामाजिक एवं षिक्षा जगत में होनी चाहिए, तभी उस शोध का अस्तित्व बना रहता है। ऐसे में नागपुरी साहित्य के एक पुरोधा मनपूरन नायक के अन्दर छूपा एक साहित्यिक सांस्कृतिक कलाकारी को समाज के सामने प्रकट करने से नागपुरी समाज में इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की आने वाली नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा दायक हो सकता है। साथ ही षिक्षा जगत में इनके व्यक्तित्व व कृतित्व का विष्लेषण होने से इनके द्वारा रचित साहित्य से अवतरित भावधारा से नागपुरी भाषा के संस्कृति के कला को एक ऊँचाई की षिखर तक ले जा सकती है।

इस तरह वर्त्तमान परिपेक्ष में इस विषय का व्यापक महत्व प्रतीत होता है। नागपुरी भाषा, संस्कृति और इस भाषा के साहित्यकारों से जुड़े अन्य लोग भी नागपुरी संस्कृति कला की विरासत से प्रेम, श्रद्धा की भवना जागृत होती रहेगी

और लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगी। इससे समाज के लोगों में जागृति आयेगी, समाज का उत्थान होगो और निरन्तर अग्रसर होती रहेगी।

## 'kks/k dk {ks=%&

प्रस्तावित शोध कार्य नागपुरी के मान्दर सम्राट, साहित्कार एवं कलाकार मनपूरन नायक के जीवन पर केन्द्रित है। अतः इस शोध कार्य का क्षेत्र यानि विषय सीमा इनके जीवन द्वारा रचित, गीत, कहानी, कविता, नाटक, निबंध, साहित्य, सामाजिक, धार्मिक एवं कलाकारी तक सीमित रहेगी।

## 'ाोध के उद्देश्य%&

1. नागपुरी काव्य के सुदीर्घ और समृद्ध परम्परा वैभव को प्रकाष में लाना।
2. नागपुरी लोक कलाकार मनपूरन नायक के प्रति कालाकारों के भावों को प्रस्तुत करना।
3. नागपुरी भाषा झारखण्ड मांदर सम्राट, गीतकार, साहित्यकार आदि संबंधों में तालमेल स्थापित करना।
4. नागपुरी साहित्य की काव्य रचना की मौलिकता को प्रस्तुत करना।
5. नागपुरी भाषा साहित्य के कला पक्ष को प्रस्तुत करना।
6. नागपुरी भाषा साहित्य के भाव पक्ष को प्रस्तुत करना।

## 'kks/k midj.k%&

प्रस्तुत शोध विषय ''नागपुरी साहित्यकार मनपूरन नायक जीवन और साहित्य'' के लिए निम्नलिखित सामग्री शोध कार्य के लिए उपयोग किए जा सकते हैंः–

1. शोध से संबंधित पुस्तकों, प्रकाषित रचनाएँ, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।
2. पत्र–पत्रिकाएँ–अखरा, कला संगम, आदिवासी सकम, झारखण्ड समाचार, शंखनाद, नागपुरी, जाय झारखण्ड, गोतिया, पझरा, जोहार सहिया आदि।
3. नक्षा पेपर, पेन, पेंसिल आदि।
4. टेप रिकॉर्डर (साक्षात्कार, सभा के लिए जरूरी)

5. कैमरा (आवष्यक चित्रों को एकत्रित करने, फोटो खींचने एवं विडियो वगैरह तैयार करने के लिए आवष्यक)
6. कम्प्युटर, लैपटॉप।
7. इंटरनेट।
8. प्रिंटर
9. प्रोजेक्टर आदि।

# iLrqr 'kks/k dk;Z dh :ijs[kk fuEuor g%&

## ^^ukxiqjh lkfgR;dkj euiwju uk;d thou vkSj lkfgR; % ,d v/;;u** ¼v/;k;hdj.k½

iLrkouk%

1. शोध के लिए प्रेरणा एवं औचित्य।
2. शोध की विषय सीमा।
3. शोध विधि।
4. विषय से सम्बंधित पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण।
5. चयनित शोध कार्य का विवरण।
6. विषय की नवीनता।

igyk v/;k; % मनपूरन नायक की जीवन परिचय।

1.1 जन्म
1.2 परिवार
1.3 बाल्यावस्था
1.4 किषोरावस्था
1.5 युवावस्था
1.6 षिक्षा
1.7 विवाह
1.8 सेवा
1.9 नागपुरी भाषा की ओर झुकाव एवं प्रेरणा।

nwljk v/;k; % मनपूरन नायक के व्यक्तित्व।

2.1 वाह्य व्यक्तित्व– कद–काठी एवं वेषभूषा।
2.2 आन्तरिक व्यक्तित्व– स्वभाव, विचार एवं दृष्टि, संग्रह वृत्ति, प्रकृति प्रेमी, संगीतज्ञ एवं संगीत प्रेमी, अध्ययनषील विद्वान।

## rhljk v/;k;%& मनपूरन नायक की समकालीन परिस्थितियाँ।

3.1 साहित्यिक

3.2 सामाजिक

3.3 राजनीतिक

3.4 सांस्कृतिक

## pkFkk v/;k; % मनपूरन नायक के समकालीन रचनाकार, वादक, नर्तक, गायक से तुलना।

## ik¡pok¡ v/;k; % मनपूरन नायक के पद्य साहित्य का अध्ययन।

4.1 गीत

4.2 कविता

## NBk v/;k; % मनपूरन नायक के गद्य साहित्य का अध्ययन।

5.1 कहानी

5.2 उपन्यास

5.3 नाटक

5.4 निबंध

5.5 आत्मकथा

5.6 जीवनी

5.7 यात्रा वृत्तांत

## lkrok¡ v/;k; % मनपूरन नायक के काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष।

6-1 Hkko i{k

(क) रस

(ख) बिम्ब विधान

(ग) प्रतीक योजना

(घ) कल्पना

6-2 dyk i{k

(क) अलंकार

(ख) छन्द

(ग) गुण–दोष

(घ) भाषा

(ड.) षिल्प व षैली

**शोध fu"d"k %**

ukV%– आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

**परिशिष्ट :**

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. सहायक ग्रंथो की सूची
3. पत्र–पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार सूची
5. चित्रावली

'kks/k funs'kd

**डॉ० रामजय नाईक**
विभागाध्यक्ष, नागपुरी विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा
राँची विष्वविद्यालय, राँची

'kks/kkFkhZ

lhek dqekjh
यू.जी.सी. नेट / एन.एफ.एस.सी उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

# vk/kkj xFkk dh lph

## ukxijh iLrdk dh lph%&

| क० स० | jpukdkj | iLrd dk uke | idk'kd | o"k |
|---|---|---|---|---|
| 1. | केषरी डॉ० सविता | कवि कंचन : जीवन और साहित्य | नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची | 2015 |
| 2. | गोंझू डॉ० गिरिधारी राम | पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व | पझरा प्रकाषन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची | 1990 |
| 3. | गोंझू शंकर लाल | गिरिराज व्यक्तित्व एवं कृतित्व | राँची | 1985 |
| 4. | तिवारी डॉ० उमेष नंद | प्रफुल्ल कुमार राय एक मूल्यांकन | ला०षो०प्रा० राँची | 2015 |
| 5. | साहु विनेष्वर | उपेंद्र पाल 'नहन' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व | राँची | 1992 |
| 6. | साहु अनिल कुमार | डॉ० भुनेष्वर अनुज :व्यक्तित्व एवं कृतित्व | राँची | 1992 |
| 7. | साहु डॉ० अंजु कुमारी | आधुनिक नागपुरी कवि मनक साहित्यिक परिचय | मार्गदर्षन पब्लिकेषन, राँची | 2018 |

# lgk;d xzUFkksa dh lwph

| Øe | jpukdkj | iqLrd dk uke | izdk'kd | o"kZ |
|---|---|---|---|---|
| 2. | केषरी डॉ० विसेष्वर प्रसाद | नागपुरी भाषा और साहित्य | नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची | 1971 |
| 3. | केशरी डॉ० विसेश्वर प्रसाद | नगपुरी भाषा उद्‌गम और विकास | झारखण्ड झरोख–राँची | 2006 |
| 4. | केषरी डॉ० विसेष्वर प्रसाद | नागपुरी कवि और उनका काव्य | नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची | 2014 |
| 5. | गोस्वामी डॉ० श्रवण कुमार | नागपुरी शिष्ट साहित्य | रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेज | 1972 |
| 6. | गोस्वामी डॉ० श्रवण कुमार | नागपुरी भाषा | विहार परिषद् – पटना | 1976 |
| 7. | मिश्र शकुन्तला (संपादक) | रस मंजरी | झारखण्ड झरोखा, राँची | 2010 |
| 8. | मिश्र शकुन्तला एवं तिवारी डॉ० उमेष नन्द | बन केवरा भाग–1 | झारखण्ड झरोखा, राँची | 2012 |
| 9. | राय क्षितिज कुमार | नागपुरी ताल | नागपुरी कला संगम | 1985 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 10. | राय क्षितिज कुमार | मन मेंजूर | छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, राँची | 1971 |
| 11. | वासंती डॉ० कुमारी | नागपुरी गीतों की छंद रचना | किषोर विद्या निकेतन | 2009 |

## i=&if=dkvk dh lwph%&

| क्र० सं० | i=&if=dkvk dk uke | vof/k | izdk'ku LFky |
|---|---|---|---|
| 1. | आदिवासी | साप्ताहिक | राँची |
| 2. | आदिवसी सकम | साप्ताहिक | जमशेदपुर |
| 3. | कला संगम | छमाही | राँची |
| 4. | गोतिया | त्रैमासिक | ढुमसा टोली, चुटिया, राँची |
| 5. | छोटानागपुर संदेष | साप्ताहिक | राँची |
| 6. | जय झारखण्ड | त्रैमासिक | डालटेनगंज |
| 7. | जोहार | त्रैमासिक | राँची |
| 8. | झारखण्ड समाचार | सप्ताहिक | राँची |
| 9. | डहर | त्रैमासिक | राँची |
| 10. | पझरा | मासिक | राँची |
| 11. | प्रभात खबर | दैनिक | राँची |
| 12. | रांची एक्सप्रेस | दैनिक | राँची |
| 13. | शंखनाद | त्रैमासिक | सिमडेगा |